नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सत्र 2023-24 से पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित किया गया है। यह संजीव बुक्स पूर्णतः नवीन पुनर्संयोजित पाठ्यपुस्तकों एवं नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित है।

नं. 1

संजीव® बुक्स

हिन्दी साहित्य-XII

(कक्षा 12 के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के विद्यार्थियों के लिए

पूर्णतः नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

- माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2024 का प्रश्न-पत्र
- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

2025

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 360/-

- प्रकाशक :

  संजीव प्रकाशन

  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,

  जयपुर-3

  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  website : www.sanjivprakashan.com

- © प्रकाशकाधीन

- **मूल्य : ₹ 360.00**

- लेजर कम्पोजिंग :

  संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

- मुद्रक :

  पंजाबी प्रेस, जयपुर

  *****

❖ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।

❖ इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।

❖ सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान
पाठ्यक्रम

हिन्दी साहित्य–कक्षा-12

इस विषय की परीक्षा योजना निम्नानुसार है—

प्रश्न-पत्र	समय (घण्टे)	प्रश्न-पत्र के लिए अंक	सत्रांक	पूर्णांक
एक पत्र	3.15	80	20	100

अधिगम क्षेत्र	**अंक**
अपठित बोध	12
रचना	16
काव्यांग परिचय	8
पाठ्यपुस्तक : **अन्तरा** भाग-2	32
पाठ्यपुस्तक : **अन्तराल** भाग-2	12

अंक

अपठित बोध : **12**

1. अपठित काव्यांश (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 6
2. अपठित गद्यांश (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 6

रचनात्मक एवं व्यावहारिक लेखन **16**

1. निबन्ध (किसी एक विषय पर विकल्प सहित) (400 शब्द) 6

अभिव्यक्ति एवं माध्यम पाठ्यपुस्तक पर आधारित–

(चार बहुचयनात्मक एवं तीन लघूत्तरात्मक प्रश्न)

2. कविता/नाटक/कहानी की रचना 3
3. पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया 4
4. विशेष लेखन-स्वरूप और प्रकार 3

काव्यांग परिचय **8 अंक**

(छः रिक्त स्थानों की पूर्ति के प्रश्न एवं एक लघूत्तरात्मक प्रश्न)

(i) काव्य-गुण, काव्य दोष 2

(ii) छन्द—गीतिका, हरिगीतिका, छप्पय, कुण्डलिया, द्रुतविलम्बित, वंशस्थ, कवित्त, सवैया 2

(iii) अलंकार—अन्योक्ति, समासोक्ति, विभावना, विशेषोक्ति, दृष्टांत, प्रतीप, मानवीकरण, व्यतिरेक 4

पाठ्यपुस्तक–अन्तरा भाग-2		**32**
(i)	सप्रसंग व्याख्या (गद्य + पद्य) (विकल्प सहित)	10
(ii)	कवि/लेखक परिचय (दो लघूत्तरात्मक प्रश्न, कवि तथा लेखक का साहित्यिक परिचय) (प्रत्येक 40 शब्दों में उत्तर)	4
(iii)	प्रश्नोत्तर गद्य भाग से (दो बहुचयनात्मक, दो लघूत्तरात्मक, विकल्प सहित एक दीर्घ-उत्तरात्मक प्रश्न-60 शब्दों में उत्तर)	9
(iv)	प्रश्नोत्तर पद्य भाग से (दो बहुचयनात्मक, दो लघूत्तरात्मक, विकल्प सहित एक दीर्घ-उत्तरात्मक प्रश्न-60 शब्दों में उत्तर)	9
पाठ्यपुस्तक–अन्तराल भाग-2		**12**
(i)	1 निबंधात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) (80 शब्दों में उत्तर)	4
(ii)	चार बहुचयनात्मक, दो लघूत्तरात्मक प्रश्न–प्रत्येक 40 शब्दों में उत्तर	8

निर्धारित पुस्तकें–

1. **अन्तरा-भाग 2**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
2. **अन्तराल-भाग 2**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
3. **अभिव्यक्ति एवं माध्यम**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

नोट– विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

अन्तरा भाग 2

पद्य खण्ड

1.	जयशंकर प्रसाद	1–11
2.	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	11–20
3.	सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'	20–30
4.	केदारनाथ सिंह	30–43
5.	रघुवीर सहाय	43–52
6.	तुलसीदास	52–63
7.	मलिक मुहम्मद जायसी	63–72
8.	विद्यापति	73–81
9.	घनानंद	81–87

गद्य खण्ड

1.	प्रेमघन की छाया-स्मृति	– रामचंद्र शुक्ल	88–98
2.	सुमिरिनी के मनके	– पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	98–112
3.	संवदिया	– फणीश्वरनाथ 'रेणु'	112–124
4.	गाँधी, नेहरू और यास्सेर अराफात	– भीष्म साहनी	124–134
5.	लघु कथाएँ	– असगर वजाहत	134–145
6.	जहाँ कोई वापसी नहीं	– निर्मल वर्मा	145–157
7.	दूसरा देवदास	– ममता कालिया	157–171
8.	कुटज	– हजारी प्रसाद द्विवेदी	171–184

अन्तराल भाग 2

1.	सूरदास की झोंपड़ी	(प्रेमचंद)	185–194
2.	बिस्कोहर की माटी	(विश्वनाथ त्रिपाठी)	194–202
3.	अपना मालवा-खाऊ-उजाड़ू सभ्यता में	(प्रभाष जोशी)	202–210

अपठित बोध

1.	अपठित काव्यांश	211–234
2.	अपठित गद्यांश	234–251

रचनात्मक एवं व्यावहारिक लेखन

1. निबन्ध– **252–304**

1. जीवन में नैतिक मूल्यों का महत्त्व 252
2. स्वावलम्बन
   अथवा
   स्वावलम्बन का महत्त्व 252
3. कामकाजी महिला और राष्ट्र निर्माण 253
4. योग और विद्यार्थी/छात्र जीवन 254
5. बढ़ती तकनीक : सुविधा या समस्या 255
6. प्राकृतिक आपदाएँ : कारण और निवारण 256
7. यदि मैं शिक्षा–मन्त्री होता 257
8. दैनिक जीवन में विज्ञान 257
9. कोरोना काल और शिक्षा 258
10. यदि मैं प्रधानाचार्य होता 259
11. कोरोना वायरस—21वीं सदी की महामारी
    अथवा
    कोरोना काल : नयी चुनौतियाँ
    अथवा
    कोरोना वायरस महामारी के सामाजिक–आर्थिक प्रभाव
    अथवा
    वैश्विक महामारी एवं निवारण के उपाय 260
12. मेक इन इण्डिया
    अथवा
    स्वदेशी उद्योग 261
13. आत्मनिर्भर भारत 261
14. कैशलेस अर्थव्यवस्था : चुनौतीपूर्ण सकारात्मक कदम 262
15. भारतीयता पर अपसंस्कृति का दुष्प्रभाव 263
16. राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान
    अथवा
    स्वच्छ भारत मिशन/अभियान 264

17. बालक का बचपन बचाओ 264
18. मिलावट का रोग
अथवा
खाद्य-पदार्थों में मिलावट और भारतीय समाज 265
19. सूचना का अधिकार : लाभ व सीमाएँ 266
20. हिन्दी भाषा राष्ट्र की अस्मिता की अभिव्यक्ति है
अथवा
राष्ट्रभाषा हिन्दी की गरिमा एवं भविष्य 267
21. शिक्षा का अधिकार 268
22. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ 268
23. राष्ट्रीय प्रगति में साहित्य का योगदान 269
24. साहित्य और समाज
अथवा
साहित्य समाज का दर्पण है 270
25. मेरा प्रिय लेखक : मुंशी प्रेमचन्द
अथवा
मेरा प्रिय साहित्यकार 271
26. मेरा प्रिय कवि
अथवा
तुलसीदास की रचनाएँ 272
27. राजस्थान के पर्यटन-स्थल
अथवा
राजस्थान में पर्यटन 273
28. भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ 274
29. इन्टरनेट : ज्ञान की दुनिया
अथवा
इन्टरनेट की उपयोगिता
अथवा
विद्यार्थी-जीवन में इन्टरनेट की भूमिका 275
30. मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप
अथवा
मोबाइल फोन का प्रचलन एवं प्रभाव 276
31. जल-संरक्षण

अथवा

जल-संरक्षण—आज की आवश्यकता

अथवा

जल ही जीवन है 277

32. कन्या भ्रूण हत्या : लिंगानुपात की समस्या

अथवा

कन्या-भ्रूण हत्या : एक जघन्य अपराध 278

33. राजस्थान में बढ़ता जल-संकट 278

34. संचार माध्यम व उसके बढ़ते प्रभाव 279

35. बाल-विवाह : एक अभिशाप 280

36. कम्प्यूटर के बढ़ते कदम और प्रभाव

अथवा

कम्प्यूटर के बढ़ते चरण 281

37. समय का सदुपयोग 282

38. मेरे सामने घटित भीषण दुर्घटना

अथवा

विद्यार्थी जीवन की अविस्मरणीय घटना 282

39. अनुशासनपूर्ण जीवन ही वास्तविक जीवन है

अथवा

विद्यार्थी-जीवन में अनुशासन 283

40. दहेज-प्रथा 284

41. मूल्यवृद्धि : एक ज्वलन्त समस्या

अथवा

बढ़ती महँगाई की मार 285

42. पर्यावरण प्रदूषण : कारण एवं निवारण

अथवा

बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण : एक समस्या 286

43. दूरदर्शन : वरदान या अभिशाप 287

44. भ्रष्टाचार : एक विकराल समस्या

अथवा

भ्रष्टाचार और गिरते सांस्कृतिक मूल्य 287

45. मानव के लिए विज्ञान—वरदान या अभिशाप

अथवा
विज्ञान के बढ़ते कदम 288
46. इक्कीसवीं सदी का भारत
अथवा
मेरे सपनों का भारत 289
47. मनोरंजन के आधुनिक साधन 290
48. जनसंख्या की समस्या एवं समाधान 290
49. राष्ट्र-निर्माण में युवाओं की भूमिका 291
50. राजस्थान में अकाल 292
51. सबके लिए शिक्षा
अथवा
सर्वशिक्षा अभियान
अथवा
सर्वशिक्षा अभियान को कैसे सफल बनाएँ 293
52. पर्यावरण संरक्षण
अथवा
पर्यावरण संरक्षण : समय की माँग
अथवा
पर्यावरण संरक्षण : प्रदूषण नियन्त्रण
अथवा
पर्यावरण संरक्षण के उपाय 294
53. शिक्षित नारी : सुख-समृद्धिकारी 295
54. कम्प्यूटर शिक्षा का महत्त्व
अथवा
कम्प्यूटर क्रान्ति : बदलता जीवन
अथवा
कम्प्यूटर शिक्षा की उपयोगिता 295
55. बढ़ती भौतिकता : घटते मानवीय मूल्य 296
56. राजस्थान के लोकगीत 297
57. बढ़ते वाहन : घटता जीवन-धन
अथवा
वाहन-वृद्धि से स्वास्थ्य हानि 298

58. नखरालो राजस्थान 299
59. मेरी प्रिय पुस्तक (रामचरितमानस) 299
60. बेरोजगारी : समस्या और समाधान
अथवा
बेरोजगारी 300
61. राजस्थान के प्रमुख पर्वोत्सव 301
62. वर्तमान की महती आवश्यकता : राष्ट्रीय एकता
अथवा
राष्ट्रीय एकता में युवा शक्ति का योगदान
अथवा
राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता 302
63. विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता
अथवा
नैतिक शिक्षा का महत्त्व 303
64. समाज-निर्माण में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका
अथवा
समाचार-पत्रों का महत्त्व 304

2. कविता/नाटक/कहानी की रचना 305-317

3. पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया 318-327

4. विशेष लेखन-स्वरूप और प्रकार 328-335

काव्यांग-परिचय

(i) (अ) काव्य-गुण, (ब) काव्य दोष 336-350
(ii) छन्द 350-360
(iii) अलंकार 360-369

❒❒❒

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2024

हिन्दी साहित्य

समय : 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

(1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
(2) **सभी** प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
(3) प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
(4) जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
(5) प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड-अ

1. **निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए :** **[12×1=12]**

(i) ''धर्म के रहस्य की इच्छा प्रत्येक मनुष्य न करे, जो कहा जाए वही कान डालकर सुन ले।'' इसे समझाने के लिए किसका दृष्टान्त दिया गया?
(अ) घड़ी का (ब) घड़े का (स) जीवन का (द) मन का

(ii) शेर किसकी मुद्रा में बैठा हुआ था?
(अ) राम की मुद्रा (ब) कृष्ण की मुद्रा (स) गौतम बुद्ध की मुद्रा (द) महावीर की मुद्रा

(iii) 'वसंत आया' कविता के रचनाकार हैं—
(अ) केदारनाथ सिंह (ब) रघुवीर सहाय (स) जयशंकर प्रसाद (द) अज्ञेय

(iv) 'भरत-राम का प्रेम' पाठ तुलसी की किस रचना से लिया गया है?
(अ) विनयपत्रिका (ब) कवितावली (स) गीतावली (द) रामचरितमानस

(v) भैरों को उकसाने और भड़काने में किसकी प्रमुख भूमिका थी?
(अ) जगधर की (ब) सुभागी की (स) मिठुआ की (द) नायकराम की

(vi) 'बिस्कोहर की माटी' पाठ विश्वनाथ त्रिपाठी की आत्मकथा का अंश है—
(अ) हिन्दी आलोचना का (ब) नंगातलाई गाँव का (स) कब तक पुकारूँ का (द) आवारा मसीहा का

(vii) ''कोइयाँ वही जलपुष्प है, जिसे कुमुद कहते हैं।'' 'बिस्कोहर की माटी' पाठ में इसका एक अन्य नाम है—
(अ) कोका-बेली (ब) कमल-ककड़ी (स) मसीण (द) कमल-पत्र

(viii) 'अपना मालवा खाऊ-उजाडू सभ्यता में' पाठ जनसत्ता के किस स्तम्भ से लिया गया है?
(अ) कागद मसी (ब) अपना मत (स) कागद कारे (द) मालवा दर्शन

(ix) ''दूसरी किसी विधा के लिए यह कतई जरूरी नहीं कि वह इसका सहारा ले लेकिन नाटक का इनके बिना काम नहीं चल सकता।''
उपर्युक्त कथन किसके लिए कहा गया है?
(अ) कथ्य के लिए (ब) कल्पना के लिए (स) नायक के लिए (द) संवाद के लिए

(x) ''यह शैली कहानी या कथा लेखन की शैली के ठीक उलटी है, जिसमें क्लाइमेक्स बिल्कुल आखिर में आता है।'' इस शैली को कहते हैं—
(अ) सीधा पिरामिड शैली (ब) उलटा पिरामिड शैली
(स) विवरणात्मक शैली (द) सूचनात्मक शैली

(xi) विशेष लेखन में डेस्क होता है—

(अ) अलग-अलग विषय के समाचारों के लिए (ब) सामान्य जन समुदाय के लिए

(स) व्यापारिक प्रतिष्ठानों के लिए (द) राजनीतिक समाचारों के लिए

(xii) हर्ष भोगले, जसदेव सिंह, नरोत्तमपुरी किस विशेष क्षेत्र के लिए जाने जाते हैं—

(अ) राजनीति के समाचारों के लिए (ब) खेल समाचारों के लिए

(स) शिक्षा व पर्यावरण के लिए (द) फिल्म व मनोरंजन के लिए

2. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित उत्तर से कीजिए— [6×1=6]

(i) .... काव्य का वह गुण है जिसके कारण वाक्य का अर्थ तुरन्त पढ़ने के साथ ही समझ में आ जाता है।

(ii) जब अर्थ सहज ही समझ में न आए या जहाँ अर्थ को समझने के लिए मस्तिष्क पर बहुत जोर लगाना पड़ता है, वहाँ .... दोष होता है।

(iii) यह मात्रिक विषम छंद है। दोहा और रोला छंदों के मेल से .... छंद बनता है।

(iv) गीतिका के आरम्भ में .... जोड़ने पर हरिगीतिका बनता है।

(v) जहाँ दोनों सामान्य या दोनों विशेष वाक्यों में बिम्ब प्रतिबिम्ब भाव होता है, वहाँ .... अलंकार होता है।

(vi) .... में प्रकृति को मानवी रूप दिया जाता है तथा निर्जीव पदार्थों को मनुष्यों की तरह काम करते या सुख-दुःख आदि भावों से पूरित और प्रभावित दिखाया जाता है।

3. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए— [6×1=6]

विश्व के किसी भी देश के पास ऐसी भूमि और संसाधन नहीं हैं, जो उसे सब प्रकार से सम्पन्न बना सके। प्रत्येक देश को किसी न किसी आवश्यकता के लिए दूसरे पर निर्भर रहना पड़ता है। परिणामस्वरूप उसे दूसरे से दबना पड़ता है और अनिवार्य रूप से अवांछित समझौते करने पड़ते हैं। हमारी तो ऐसी कोई मजबूरी नहीं है। पिछले दिनों हम इसका प्रत्यक्ष अनुभव कर चुके हैं। परमाणु परीक्षण करने के पश्चात् विश्व ने हम पर कई प्रकार के प्रतिबन्ध लगाए थे। परिणाम क्या हुआ? क्या हमारे देश का कोई काम रूका? क्या देशवासियों को किसी कष्ट का सामना करना पड़ा? कभी नहीं। इराक का क्या हुआ? प्रतिबन्ध लगने के बाद उसे दाने-दाने के लिए तरसना पड़ा।

(i) विश्व में किस देश के पास ऐसी भूमि है जो उसे सब प्रकार से सम्पन्न बना सके?

(ii) किसे अवांछित समझौते करने पड़ते हैं?

(iii) भारत ने जब परमाणु परीक्षण किया तो क्या प्रतिक्रिया हुई?

(iv) इराक पर प्रतिबंध लगने पर क्या हुआ?

(v) किसे कष्टों का सामना नहीं करना पड़ा?

(vi) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

4. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए— [6×1=6]

पायो जी मैंने राम रतन धन पायौ।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, करि किरपा अपनायौ।
जनम जनम की पूँजी पाई, जग में सबै खोवायौ।।
खरचै नहिं कोई चोर न लेवैं, दिन-दिन बढ़त सवायौ।
सत की नाँव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तरि आयौ।
मीराँ के प्रभु गिरिधर नागर, हरषि हरिष जस गायो।

(i) मीराँ ने कैसा धन पाया?

(ii) सतगुरु ने कैसी वस्तु दी?

(iii) सब कुछ खोकर मीराँ ने कैसा धन प्राप्त किया?

(iv) मीराँ के धन की क्या विशेषता है?
(v) सत की नाँव के खेवटिया कौन हैं?
(vi) प्रस्तुत पद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

खण्ड-ब

निर्देश : प्रश्न संख्या 5 से 16 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए अधिकतम शब्द-सीमा 40 शब्द हैं।

5. रामचन्द्र शुक्ल समवयस्क हिन्दी-प्रेमियों की मण्डली में कौन-कौन थे? [2]
6. 'काबुली-कायदा' सुनते ही मोदिआइन तमककर खड़ी क्यों हो गई? संवदिया पाठ के आधार पर लिखिए। [2]
7. 'सरोज स्मृति' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। [2]
8. ''कुसुमित कानन हेरि कमलमुखि, मूदि रहए दु नयन।'' काव्य पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। [2]
9. ''जगधर का मन आज खोंचा लेकर गलियों का चक्कर लगाने में न लगा।'' जगधर के लिए ऐसा क्यों कहा गया? पठित पाठ के आधार पर लिखिए। [2]
10. अमेरिका की खाउ-उजाडू जीवन पद्धति ने दुनिया को कैसे प्रभावित किया है? पठित पाठ के आधार पर लिखिए। [2]
11. 'प्रतीप' अलंकार को उदाहरण सहित समझाइए। [2]
12. कविता में बिम्ब और छंद किस प्रकार सहायक होते हैं? [2]
13. समाचार लेखन में मुखड़े (इंट्रो) को समझाइए। [2]
14. विशेष लेखन के क्षेत्र में खेल पत्रकारिता की विशेषताएँ लिखिए। [2]
15. 'भीष्म साहनी' का साहित्यिक परिचय लिखिए। [2]
16. 'रघुवीर सहाय' का साहित्यिक परिचय लिखिए। [2]

खण्ड-स

निर्देश : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए।

17. विरहिणी नायिका पर 'बारहमासों' का प्रभाव किस प्रकार होता है? लिखिए। [3]

अथवा

'देवसेना का गीत' कविता की मूल संवेदना लिखिए।

18. 'साझा' कहानी वर्तमान समय में किस वर्ग की स्थिति को स्पष्ट करती है? [3]

अथवा

'दूसरा देवदास' कहानी युवामन की संवेदना, भावना और विचार जगत की उथल-पुथल को आकर्षक भाषा शैली में प्रस्तुत करती है। कथन को स्पष्ट कीजिए।

19. सूरदास जगधर से अपनी आर्थिक हानि गुप्त क्यों रखना चाहता था? [4]

अथवा

''मालवा में विक्रमादित्य और भोज और मुंज रिनेसां के बहुत पहले हो गए।'' कैसे? स्पष्ट कीजिए।

खण्ड-द

20. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : [5]

दुरंत जीवन-शक्ति है। कठिन उपदेश है। जीना भी एक कला है। लेकिन कला ही नहीं, तपस्या है। जियो तो प्राण ढाल दो जिन्दगी में, मन ढाल दो जीवनरस के उपकरणों में। ठीक है। लेकिन क्यों? क्या जीने के लिए जीना ही बड़ी बात है? सारा संसार अपने मतलब के लिए ही तो जी रहा है। याज्ञवल्क्य बहुत बड़े ब्रह्मवादी ऋषि थे। उन्होंने अपनी पत्नी को विचित्र भाव से समझाने की कोशिश की कि सब कुछ स्वार्थ के लिए है। पुत्र के लिए पुत्र प्रिय नहीं होता, पत्नी के लिए पत्नी प्रिय नहीं होती सब अपने मतलब के लिए प्रिय होते हैं–'आत्मनस्तु कामाय सर्व प्रियं भवति।'

अथवा

एक भरे-पूरे ग्रामीण अंचल को कितनी नासमझी और निर्ममता से उजाड़ा जा सकता है, सिंगरौली इसका ज्वलन्त उदाहरण है। अगर यह इलाका उजाड़ रेगिस्तान होता तो शायद इतना क्षोभ नहीं होता; किन्तु सिंगरौली

की भूमि इतनी उर्वरा और जंगल इतने समृद्ध हैं कि उनके सहारे शताब्दियों से हजारों वनवासी और किसान अपना भरण-पोषण करते आए हैं। 1926 से पूर्व यहाँ खैरवार जाति के आदिवासी राजा शासन करते थे, किन्तु बाद में सिंगरौली का आधा हिस्सा जिसमें उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश के खण्ड शामिल थे, रींवा राज्य के भीतर शामिल कर लिया गया।

21. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए— [5]

पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढे। नीरज नयन नेह जल बाढ़े।।
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा। एहि तें अधिक कहौं मैं काहा।।
मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ। अपराधिहु पर कोह न काऊ।।
मो पर कृपा सनेहु बिसेखी। खेलत खुनिस न कबहुँ देखी।।
सिसुपन ते परिहरेउँ न संगू। कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू।।
मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही। हरि हूँ खेल जितावहिं मोही।।

अथवा

यह मधु है-स्वयं काल की मौना का युग-संचय,
यह गोरस-जीवन-कामधेनु का अमृत-पूत पय
यह अंकुर-फोड़ धरा को रवि को तकता निर्भय
यह प्रकृत स्वयंभू, ब्रह्म, अयुत: इसको भी शक्ति को दे दो
यह दीप, अकेला, स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता, पर इसको भी पंक्ति को दे दो।

22. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 400 शब्दों में निबंध लिखिए— [6]

(अ) भगवान राम भारतीय जीवनादर्श
(ब) हमारा स्वास्थ्य और भोजन
(स) राजस्थान के पर्यटन स्थल
(द) मेरा प्रिय कवि सूरदास

❐❐❐

हिन्दी साहित्य–कक्षा-12
अन्तरा भाग 2 (पद्य खण्ड)

1. जयशंकर प्रसाद

कवि परिचय–आधुनिक छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद का जन्म सन् 1889 ई. में काशी में हुआ था। प्रसादजी का जन्म तो बहुत सम्पन्न परिवार में हुआ था, लेकिन बदलते काल चक्र ने उन्हें झकझोर कर रख दिया। बारह वर्ष की अवस्था में पिता का देहान्त हो गया। तत्पश्चात् दो-तीन वर्ष में ही माता का स्वर्गवास हो गया और जब प्रसाद सत्रह वर्ष के थे, तब बड़े भाई शंभूरतन की भी मौत हो गई। अल्पायु में ही ऋणग्रस्त परिवार का सारा दायित्व प्रसाद के सिर पर आ गया था। इन अवसादों और वेदनाओं का प्रभाव प्रसाद के जीवन व साहित्य दोनों पर पड़ा।

प्रसादजी की विद्यालयी शिक्षा केवल आठवीं कक्षा तक ही हो पाई थी, किन्तु स्वाध्याय द्वारा उन्होंने संस्कृत, पालि, उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं तथा साहित्य का गहन अध्ययन किया। इतिहास, दर्शन, धर्मशास्त्र और पुरातत्त्व के प्रकांड विद्वान् प्रसाद अत्यन्त सौम्य, शांत एवं गंभीर प्रकृति के व्यक्तित्व के धनी थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रसाद मूलत: कवि थे; लेकिन उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध आदि विविध साहित्यिक गद्य विधाओं में उच्च कोटि की रचनाओं का सृजन किया। ये भारतीय संस्कृति और जीवन-मूल्यों से प्रभावित एवं देश-प्रेम से मण्डित थे। इनके काव्य में आध्यात्मिकता, रहस्यवाद, राष्ट्रीय जागरण की सुन्दर अभिव्यंजना हुई है। प्रसाद को हिन्दी साहित्य में छायावाद का उन्नायक माना जाता है। इस दृष्टि से इनका 'कामायनी' महाकाव्य कालजयी सर्वश्रेष्ठ रचना है। इनका निधन सन् 1937 में हुआ।

कठिन शब्दार्थ एवं सप्रसंग व्याख्याएँ

देवसेना का गीत

(1)

आह! वेदना मिली विदाई!
मैंने भ्रम-वश जीवन संचित,
मधुकरियों की भीख लुटाई।

कठिन शब्दार्थ–वेदना = दु:ख, कष्ट-पीड़ा। **संचित** = एकत्रित। **मधुकरियों** = भिक्षा।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश कवि जयशंकर प्रसाद के नाटक 'स्कन्दगुप्त' के 'देवसेना का गीत' से अवतरित किया गया है। इसमें मालवा के राजा बंधुवर्मा की बहन देवसेना की निराशा एवं वेदना की अभिव्यक्ति है।

व्याख्या–देवसेना सोचती है कि अब जीवन के अन्तिम पड़ाव पर भी मुझे पीड़ा ही मिली। अर्थात् जीवन से विदा लेते समय भी मुझे दु:खों से छुटकारा नहीं मिला। अपने यौवन में किये गए क्रियाकलापों को ही मैंने कर्म माना जबकि आज लगता है कि मैंने भिक्षा माँगने का ही कार्य किया है और कुछ नहीं किया है। अतीत की वे सभी मधुर यादें देवसेना को कचोट रही हैं और उन्हें अतिशय वेदना की अनुभूति हो रही है।

विशेष–(i) कवि ने देवसेना के माध्यम से अपनी वेदना व्यक्त की है।

(ii) तत्सम शब्दावली एवं गेयता द्रष्टव्य है। करुण रस की प्रधानता है।

(2)

छलछल थे संध्या के श्रमकण,
आँसू-से गिरते थे प्रतिक्षण।
मेरी यात्रा पर लेती थी–
नीरवता अनंत अँगड़ाई।
श्रमित स्वप्न की मधुमाया में,
गहन-विपिन की तरु-छाया में,
पथिक उनींदी श्रुति में किसने–
यह विहाग की तान उठाई।

कठिन शब्दार्थ–नीरवता = खामोशी। **अनन्त** = अन्तहीन। **श्रमित** = थका हुआ। **गहन** = घना। **विपिन** = जंगल। **पथिक** = यात्री। **श्रुति** = कान। **विहाग** = अर्धरात्रि में गाया जाने वाला गीत।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक 'स्कन्दगुप्त' से लिया गया है। इसमें मालवा के राजा बन्धुवर्मा की बहिन देवसेना अपनी हृदयगत वेदना को लेकर चिन्तित दिखाई गई है।

व्याख्या–देवसेना अपने जीवन के अंतिम समय में वेदना का अनुभव करते हुए सोचती है कि मेरे जीवन का संध्या काल आ चुका है और जीवनभर के अनन्त परिश्रम के कण अर्थात् पसीने की बूँदें निरन्तर गिर रही हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वे पसीने की बूँदें आँसुओं के समान प्रतिपल आँखों से गिर रहे हैं। मेरी जीवन यात्रा में अब चारों तरफ नीरवता या खामोशी फैली हुई थी। देवसेना कहती है कि थके हुए स्वप्नों की मधुर स्मृति में, जैसे वन के पेड़ों की गहरी छाया में थके-सोये पथिक को किसने आवाज दी। यह प्रेम-विरह की राग कौन सुना रहा है।

आशय है कि देवसेना, स्कन्दगुप्त से प्रेम करती थी और स्कन्दगुप्त जीवन के अंतिम मोड़ पर उसे साथ देने के लिए पुकार रहा है जहाँ देवसेना मना कर देती है और पीड़ा का अनुभव करती है।

विशेष–(i) कवि की स्वानुभूति वेदना रूप में व्यक्त हुई है। विहाग राग के माध्यम से वेदना की अधिकता व्यंजित हुई है।

(ii) 'स्वप्न' को मधुमाया कहना अनूठा प्रयोग है। भाषा तत्सम-प्रधान एवं भावानुकूल है। अनुप्रास, उपमा एवं रूपक अलंकार हैं। मुक्तक छन्द एवं करुण रस की प्रधानता है।

(3)

लगी सतृष्ण दीठ थी सबकी,
रही बचाए फिरती कबकी।
मेरी आशा आह! बावली,
तूने खो दी सकल कमाई।

कठिन शब्दार्थ–सतृष्ण = तृष्णा के साथ। **दीठ** = दृष्टि। **सकल** = समस्त।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'स्कन्दगुप्त' नाटक से संकलित 'देवसेना का गीत' से लिया गया है। इसमें देवसेना के हृदय के मधुर स्वप्नों का वर्णन हुआ है।

व्याख्या–देवसेना कहती है कि जब वह यौवन से परिपूर्ण थी, तब उसे पाने के लिए न जाने कितने लोगों की ललचाई दृष्टि उस पर पड़ी, जबकि मैं उनकी दृष्टि से सदैव अपने को बचाती रही। वह कहती है कि अरी मेरी आशा, आज तुमने स्कन्दगुप्त के प्रस्ताव को पाकर मेरे हृदय में हलचल मचा दी है और मेरी मन की शान्ति खो दी है। क्योंकि यह आशा मेरे हृदय में जगकर ही मुझे हरा गई है। मैंने अपने जीवन की सारी कमाई खो दी है अर्थात् स्कन्दगुप्त का प्रेम खो दिया है। अत: बहुत व्यथित हूँ।

विशेष–(i) 'लगी सतृष्ण दीठ थी सबकी, रही बचाए फिरती कबकी।' में यौवन काल के स्वाभाविक तथ्य का वर्णन है।

(ii) भाषा संस्कृतनिष्ठ तथा अनुप्रास अलंकार है। मुक्तक छन्द करुण रस एवं प्रसाद गुण की प्रधानता है।

(4)

चढ़कर मेरे जीवन-रथ पर,
प्रलय चल रहा अपने पथ पर।

मैंने निज दुर्बल पद-बल पर,
उससे हारी-होड़ लगाई।
लौटा लो यह अपनी थाती
मेरी करुणा हा-हा खाती
विश्व! न सँभलेगी यह मुझसे
इससे मन की लाज गँवाई।

कठिन शब्दार्थ–प्रलय = विध्वंस। **होड़** = स्पर्धा। **थाती** = धरोहर।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश जयशंकर प्रसाद के नाटक 'स्कन्दगुप्त' से संकलित 'देवसेना का गीत' से लिया गया है। इसमें कवि ने देवसेना के भावविह्वल हृदय से संसार को सम्बोधित करने का वर्णन किया है।

व्याख्या–देवसेना कहती है कि प्रलय मेरे जीवन-रथ पर सवार है, किन्तु अपनी दुर्बलताओं को जानते हुए भी और हार की निश्चितता का ज्ञान होने के बाद भी मैंने प्रलय से संघर्ष किया है। भाव यह है कि जीवन के सन्ध्याकाल का पूर्ण ज्ञान होने पर भी मैंने कभी हृदय से पराजय को स्वीकार नहीं किया है। अंत में देवसेना भाव-विह्वल होकर कहती है कि आपने मुझको विश्वास रूपी जो धरोहर सौंप रखी थी, उसे अब वापस ले लो। मेरी करुणा मुझे ही वेदना से व्यथित करते हुए समाप्त कर रही है। हे संसार, अब मुझसे यह प्रेम की पीड़ा नहीं सँभलेगी क्योंकि इसके कारण मैंने अपने ही मन की लाज एवं मर्यादा को खो दिया है अर्थात् मन में जो आत्मविश्वास था उसे खो दिया है।

विशेष–(i) देवसेना की वेदना एवं संघर्षपूर्ण जीवन का वर्णन प्रतीकों के माध्यम से किया गया है।

(ii) भाषा संस्कृतनिष्ठ है। अनुप्रास, रूपक एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग किया गया है।

कार्नेलिया का गीत

(1)

अरुण यह मधुमय देश हमारा!
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।
सरस तामरस गर्भ विभा पर–नाच रही तरुशिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर–मंगल कुंकुम सारा!

कठिन शब्दार्थ–अरुण = लालिमायुक्त। **मधुमय** = मिठास से भरा। **क्षितिज** = धरती और आकाश एक साथ मिलते हुए दिखाई देने वाला स्थान। **तामरस** = कमल, रक्तोत्पल। **गर्भ** = कोश। **विभा** = आलोक, प्रकाश। **तरुशिखा** = वृक्ष की चोटी। **मनोहर** = सुन्दर। **मंगल** = शुभ, कल्याणकारी। **कुंकुम** = सौभाग्यसूचक रंग।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश जयशंकर प्रसाद के नाटक 'चंद्रगुप्त' के एक प्रसिद्ध गीत 'कार्नेलिया का गीत' से लिया गया है। कार्नेलिया इसमें भारत के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन करती है।

व्याख्या–सिन्धु नदी के किनारे वृक्ष के नीचे बैठी हुई कार्नेलिया भारत की महत्ता का वर्णन करती हुई गा रही है कि यह हमारा भारत देश कितनी मधुरता से भरा हुआ है। यहाँ सूर्य की लालिमा फैली हुई है जिससे प्रात:काल का समय है, वृक्षों की ऊँची-ऊँची सुन्दर चोटियों पर सरस सुनहरी आभा फैली हुई है। यह मनोरम भारत देश सबको आश्रय देता है। यहाँ वृक्षों की शाखाओं से छनकर जब सूर्य की किरणें कमलों पर अपनी कान्ति बिखेरती हैं तब वे पुष्पों पर नृत्य करती प्रतीत होती हैं। यहाँ चारों ओर जीवन का सुंदर, सरस, मनोहारी रूप दिखाई दे रहा है। जैसे सभी ओर सौभाग्यसूचक रंग अर्थात् कुंकुम फैला हो। यहाँ प्रात:काल की शीतल, मंद, सुगंधित पवन बह रही है।

विशेष–(i) भारतवर्ष की महत्ता एवं राष्ट्रप्रेम का वर्णन किया गया है।

(ii) छायावादी शैली में प्रकृति का सूक्ष्म चित्रण हुआ है।

(iii) संस्कृतनिष्ठ परिष्कृत एवं लाक्षणिक भाषा का प्रयोग हुआ है।

(iv) प्रस्तुत कविता में अनुप्रास, रूपक और मानवीकरण अलंकार प्रयुक्त हैं।

(2)

लघु सुरधनु से पंख पसारे–शीतल मलयसमीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किए–समझ नीड़ निज प्यारा।
बरसाती आँखों के बादल–बनते जहाँ भरे करुणा जल।
लहरें टकराती अनंत की–पाकर जहाँ किनारा।

हेमकुंभ ले उषा सवेरे—भरती ढुलकाती सुख मेरे।
मदिर ऊँघते रहते जब—जगकर रजनी भर तारा।

कठिन शब्दार्थ—सुरधनु = इंद्रधनुष। **मलयसमीर** = चंदन की गंधयुक्त पवन। **नीड़** = घोंसला। **अनंत** = सागर। **हेमकुंभ** = स्वर्ण-कलश। **मदिर** = मस्ती पैदा करने वाला। **रजनी** = रात्रि।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित '**चंद्रगुप्त**' नाटक से संकलित '**कार्नेलिया का गीत**' से लिया गया है। इन पंक्तियों में कार्नेलिया भारत के महिमामय सौन्दर्य का गीत गाकर वर्णन कर रही है।

व्याख्या—कार्नेलिया गा रही है कि यहाँ पर मलयाचल पर्वत से प्रात:काल की शीतल, सुगंधित मन्द हवा चल रही है जो सम्पूर्ण भारतवर्ष को सहारा प्रदान करती है। जिससे यह पर्वत इन्द्रधनुष के समान दिखाई देता है। यहाँ आकाश में पक्षी अपने पंख फैलाकर भारत की ओर अपने प्यारे घोंसलों की कल्पना करके उड़ते हैं। अर्थात् उनको यह देश अपना घर लगता है। जब वर्षा ऋतु में बादल बरसते हैं तो ऐसा लगता है कि यहाँ के लोगों की आँखों से करुणा-जल बरस रहा है। सागर की लहरों को भारत के किनारों से टकराने के बाद ही विश्राम मिलता है। प्रात:काल में जब उषा का आगमन होता है तो वह ऐसे लगती है मानो सूर्य-रूपी स्वर्ण-कलश से सुख की धारा बिखेर रही हो। उस समय पूरी रात जागने के कारण तारे फीकी चमक से ऊँघने लगते हैं।

विशेष—(i) इसमें भारत की सांस्कृतिक गरिमा, मानवीय करुणा, संवेदना एवं अतिथि-परायणता आदि की सशक्त व्यंजना हुई है।

(ii) अनुप्रास, रूपक, उपमा और मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

(iii) बिम्बों की अधिकता है।

(iv) संस्कृतनिष्ठ परिष्कृत भाषा में छायावादी गीत है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

देवसेना का गीत—

प्रश्न 1. ''मैंने भ्रमवश जीवन संचित, मधुकरियों की भीख लुटाई''—पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—देवसेना स्कन्दगुप्त को चाहती थी किन्तु स्कन्दगुप्त मालवा के धनकुबेर की पुत्री विजया को चाहता था। जीवन के अन्तिम पड़ाव पर स्कन्दगुप्त देवसेना को पाने के लिए तैयार हुआ था लेकिन तब देवसेना तैयार नहीं थी। तब व्यथित हृदय से देवसेना सोचती है कि मैंने अपनी आकांक्षा रूपी पूँजी को भीख की तरह लुटाया है। मैं अभिलाषा रखकर भी स्कन्दगुप्त का प्रेम नहीं पा सकी। मुझे अब जीवन के अंतिम मोड़ पर इसी बात की वेदना है।

प्रश्न 2. कवि ने आशा को बावली क्यों कहा है?

उत्तर—कवि ने आशा को बावली इसलिए कहा है कि आशा तो असंभव बात की भी बनी रहती है। देवसेना को आशा थी कि स्कन्दगुप्त उसे मिलेगा और जब वह मिला तो देवसेना ने उसके अनुनय-विनय को ठुकरा दिया। वह प्रेम-भावना भी तो एक आशा ही थी जो द्वार से लौटाने के बाद भी पाने की आशा रखती है, उसे बावली ही तो कहा जाएगा।

प्रश्न 3. ''मैंने निज दुर्बल.......होड़ लगाई'' इन पंक्तियों में 'दुर्बल पद-बल' और 'हारी-होड़' में निहित व्यंजना स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—'दुर्बल पद-बल' में देवसेना के बल की सीमा का ज्ञान कराता है अर्थात् देवसेना जानती है कि वह दुर्बल है फिर भी वह अपने भाग्य से लड़ रही है। इसी प्रकार 'होड़ लगाई' पंक्ति में निहित व्यंजना देवसेना की लगन व तत्परता को दर्शाता है। देवसेना इस बात से भली-भाँति परिचित है कि प्रेम में उसकी हार है फिर भी पूरी लगन से वह **प्रलय** से होड़ लगाती है और हार नहीं मानती है।

प्रश्न 4. काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

(क) श्रमित स्वप्न की मधुमाया.............तान उठाई।

(ख) लौटा लो.............लाज गँवाई।

उत्तर—(क) भावपक्ष—इसमें कवि ने एक ऐसे व्यक्ति की कल्पना की है जो थकान के कारण सघन वन में वृक्षों की छाया में सोया हुआ है। वह स्वप्नलोक की मधुर अनुभूतियों में खोया हुआ है, तभी किसी ने अर्धरात्रि में गाया जाने वाला विहाग राग अलापना शुरू किया, जिससे उसकी नींद उचट गई और स्वप्न भंग हो गया।